International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 4; Issue 6; June 2017; Page No. 113-114

पर्यावरण सरंक्षण में बौद्ध दर्शन का योगदान

भारत आर्य
शोधार्थी, इतिहास विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

हिन्दुस्तानी संस्कृति में प्रकृति को माँ से जोड़ा गया है। इसलिए ऐसा कहा है की हमारे जीवन पर इसका असर बहुत ज्यादा ही है। वायु से हमें ऊर्जा मिलती है, वन से भोजन तथा थल से संरक्षण। इनके अलावा कई और ऐसी चीजें हैं, जिनका असर हमारे जीवन पर बहुत गहरा है। सभी धर्मो के ग्रन्थों में स्पष्ट रूप से लिखा गया है कि बिना प्रकृति के जीवन असंभव है। यदि मानव सभ्यता को बचाना है, तो प्रकृति के बीच में रह कर प्रकृति का संरक्षण करना होगा। आज दुनिया के सामने जलवायु परिवर्तन एक गंभीर चुनौती है। इसके लिए सामुहिक मानव प्रयास और समेकित प्रत्युत्तर की आवश्यकता है। भारत में प्राचीनकाल से ही विश्वास और प्रकृति के बीच गहरा सम्बन्ध रहा है। बौद्ध धर्म और पर्यावरण एक दुसरे से जुड़े हुए हैं। पर्यावरण की अशुद्धता मन को प्रभावित करती है और मन की अशुद्धता पर्यावरण को दूषित करती है। पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए हमें अपने मन को शुद्ध करना होगा। क्योंकि पारिस्थितिकीय संकट वास्तव में मन के असंतुलन की प्रतिच्छाया है। इसलिए भगवान बुद्ध ने प्राकृतिक संसाधनों के सरंक्षण की आवश्यकता को बहुत महत्व दिया। भिक्षुओं को भी जल संसाधनों को दूषित करने से रोका। बौद्ध धर्म में प्रकृति संरक्षण के साथ–साथ पशु–पक्षियों व जीव–जन्तुओं के संरक्षण की प्रेरणा स्वयं बुद्ध ने दी थी। वे इनके मध्य निवास करते तथा उनसे वे अत्यधिक प्रेम करते थे।

बौद्ध धर्म में प्रकृति के आधार पर ही जीवन की कल्पना की गई है। इनका मत है कि प्रकृति और इंसान एक–दूसरे पर निर्भर है। जिसे भी ज्ञानबोध या मुक्ति चाहिए उसे महसूस करना होगा कि उसमें और दूसरे प्राणियों में कोई फर्क नहीं है। पाली त्रिपिटक में कहा गया है कि प्रकृति में पाई जाने वाली सभी चीजें एक– दूसरे से जुड़ी है। ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् माहत्मा बुद्ध ने प्राप्त को जन–जन तक पहुँचाने हेतु उपदेश दिये। उनके मतानुसार जीवन में मध्यम मार्ग का पालन कर जीवन को सफल बनाया जा सकता है। उन्होंने आचरण परिवर्तन की शिक्षा पर जोर दिया। स्वय महात्मा बुद्ध ने भी जन–जन तक प्रकृति संरक्षण का संदेश पहुँचाया। उनके जीवन से सम्बन्धित महत्वपूर्ण घटनाएँ भी वन में या वृक्ष के नीचे ही घटित हुई थी, कपिलवस्तु का लुम्बिनी वन जहाँ बुद्ध का जन्म हुआ था, गया का बोधि वृक्ष जहाँ उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई, बनारस के समीप मृगदान जहाँ उन्होंने सर्वप्रथम धर्मोपदेश दिया तथा कुशीनगर के समीप का वन जहाँ बुद्ध को महापरिनिर्वाण प्राप्त हुआ। बाद में बौद्ध संगितियाँ भी वन में गुफाओं में हुई थी।

इसलिये बुद्ध द्वारा बौद्धसंघ के लिए उपदिष्ट किये गये अपरिहरणीय धर्मो में से एक वन की कुटिया में निवास करना भी है। दूसरा जीवधारियों को हानि नहीं पहुँचाना है। इसी कारण बौद्ध भिक्षु वन में विशाल वृक्षों, गुफाओं, पर्वतीय प्रदेशों एवं नदियों के आस–पास रहते थे, ताकि स्वच्ड जल मिल सके और प्रकृति की गोद में सुख और आनन्द की प्राप्ति हो सके। बौद्ध भिक्षुओं के निवास हेतु विहार इसी कारण प्राकृतिक प्रदेश में वन आच्छादित पहाड़ी की तलहटी में निर्मित किये जाते थे, साथ ही प्रकृति के मध्य एवं जन शोरगुल से दूर रहकर उपासना एवं साधना कर सकें।

अंगुतर निकाय के अनुसार बुद्ध का कहना था कि प्रत्येक वन क्षेत्र वन्य जीवों का घर है। जब कोई भिक्षु वन क्षेत्र में निवास करे तो उसे उन जीव–जन्तुओं की सम्भाल करनी चाहिए। बौद्ध धर्म का प्रथम नीतिगत वचन अहिंसा है। बुद्ध का मानना था कि वे व्यक्ति जो जीव हिंसा कर जीवन यापन करते हैं उन्हें अपने कर्मों का फल भोगना होता है। अर्थात् हिंसक कर्मों का परिणाम दुःख के रूप में भोगना पड़ेगा इसलिए बुद्ध ने जीव–जन्तुओं के प्रति मैत्री का भाव प्रकट किया है।

इसी प्रकार बुद्ध के अनुसार सुख–दुःख व्यक्ति के कर्मो पर आधारित है। यदि व्यक्ति बुरे कर्म करता है तो दुःख आते है तथा अच्छे कर्म करता है तो सुख भोगता है। इसलिए आचरण को उत्तम बनाया जाना चाहिए एवं सादगीपूर्ण जीवन जीना चाहिए। बौद्ध ग्रन्थ संयुक्त निकाय में फलदार वुक्ष लगवाने, पुल बंधवाने, कुएँ खुदवाने, प्याऊ चलवाने आदि को महान् पुण्य का कार्य बताया गया है जिसके बल पर मनुष्य स्वर्गलोक की प्राप्ति करता है। यही महान् शौर्य शासक अशोक की प्रेरणा का स्त्रोत था। बौद्ध धर्म से प्रभावित होकर ही अशोक ने कौटिल्य द्वारा प्रतिपादित लौह विजय के सिद्धान्त को पलटकर विश्व को ''जीओ और जीने दो'' का पाठ पढ़ाया।

निर्वाण प्राप्ति के लिए बुद्ध द्वारा प्रतिपादित अष्टांगिक मार्ग (सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाक, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीविका, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मतृति, सम्यक, समाधि) संतुलित सरल जीवन की ओर अग्रसर करने वाले कर्म के आठ सिद्धान्त थे, जिनके सम्मिलित रूप को ''मध्यम मार्ग'' कहा गया। यह अष्टांगिक मार्ग केवल एक आस्था अथवा ज्ञान का ही नहीं अपितु व्यवहार का विषय है। इनके अनुसरण से वर्तमान में प्रचलित सतत् विकास की अवधारणा के लक्ष्यों को हासिल किया जा सकता है। यदि प्रत्येक व्यक्ति यह संकल्प ले कि वह ऐसा कोई कार्य नहीं करेगा कि पर्यावरण को कोई भी नुकसान पहुँचे तो तेजी से बढ़ रही जलवायु परिवर्तन की समस्या से तो आसानी से निपटा ही जा सकता है। साथ ही ईमानदारी से जीविकोपार्जन किया जाये अर्थात् जरूरत के मुताबिक ही संसाधनों का प्रयोग करने का संकल्प लिया जाये और हमेशा यह बात याद रखें कि प्राकृतिक संसाधनों पर सभी का समान अधिकार है तथा आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए भी इनको बचाना है।

बौद्ध धर्म की शिक्षा के अनुसार प्राकृतिक पर्यावरण और उसमें रहने वाले सचेतन लोगों के बीच अत्यधिक परस्पर निर्भरता है। पर्यावरण न केवल इसी पीढी, बल्कि भावी पीढ़ियों, के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि हम पर्यावरण के शोषण में अति करेंगे तो हो सकता है कि हमें वर्तमान में कुछ आर्थिक या अन्य लाभ मिल जाए, लेकिन भविष्य में यह न केवल हमारे लिए, अपितु भावी

पीढ़ियों के लिए भी हानिकारक होगा। जब पर्यावरण परिवर्तित होता है तो मौसम तंत्र ही बदल जाता है। परन्तु जब इसमें नाटकीय परिवर्तन होता है तो अर्थव्यवस्था के साथ– साथ इसका प्रभाव हमारे शारीरिक स्वास्थ्य पर भी पड़ता है। इसलिए प्राकृतिक पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण में सफलता के लिए यह महत्वपूर्ण है कि सबसे पहले मनुष्यों के बीच ही एक आंतरिक सन्तुलन स्थापित किया जाये। पर्यावरण के महत्व के प्रति अनभिज्ञता के कारण ही आज तक मानव समुदाय की इतनी हानि हुई है। यदि हमें पर्यावरण को बचाना है तो हम में सच्ची सार्वभौमिक उत्तरदायित्व की भावना केन्द्रीय प्रेरणा का होना बहुत जरूरी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Dharma Gaia: A Harvest of essays in Budhism and Ecology, Allah Hunt Badiner, 1990.
2. A.L. Basham, The Wonder thatwas India, London and Calcutta.
3. रोमिला थापर, भारत का इतिहास, दिल्ली, 1975.
4. सत्यकेतु विद्यांलकार, प्राचीन, भारत का धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन, दिल्ली 2005.
5. संघर्ष निषेध और पर्यावरण चेतना के लिए विश्व हिन्दू–बौद्ध पहल : संवाद (बोधगया), प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन।
6. विभा उपाध्याय, आकिीलोजी, म्यूजियोलोजी एण्ड कंजर्विशन, ए रिव्यू, जयपुर, 2012.
7. शिवरक्षा सुलक, सोशली इंगेज्ड बुद्धिज्म, दिल्ली, 2005.
8. महान्याय 14 वें दलाईलामा, फोटोग्राफ्स और परिचय– गेलेनरॉवेल : थेम्स एंड हडसन लि. लंदन. 1990 (पे.53–54)